मंगलवार, 18 अगस्त 2026

विकल्प

इंटर्नशिप विशेष

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के विद्यार्थियों का प्रायोगिक पत्र

पत्रकारिता व संचार के विद्यार्थियों के देश के मीडिया संस्थानों में काम करने के अनुभवों ओर सीखों का दस्तावेज

मैं न्यूजरूम में हूँ...

सुनिए Internship की कहानियां

आज से माखनपुरम में 'अभ्युदय' 50 से ज़्यादा हस्तियां आएँगी

बिशनखेडी (भोपाल) 17 अगस्त। कल मंगलवार से माखनपुरम में देश के विभिन्न शहरों में पत्रकारिता क्षेत्र में काम कर रही हस्तियां जुटेंगीं। इनमें सभी वे लोग हैं जो माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचारविश्वविद्यालय में अध्ययन करके मीडिया और संबंधित संस्थानों में गए। इनमें से कई लोगों ने अपने उद्यम शुरू कर नई इबारत लिखी। तीन दिनी 'अभ्युदय' कार्यक्रम का उद्घाटन विवि कार्यपरिषद के अध्यक्ष व प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे जबकि प्रख्यात अभिनेता व लेखक पीयूष मिश्रा मुख्य अतिथि होंगे। अभ्युदय का इस वर्ष का संस्करण विवि के पूर्व विद्यार्थियों को समर्पित है। वे अपनी पूर्व पाठशाला के प्रांगण में आकर अपनी कनिष्ठ पीढ़ी से अनुभव साझा करेंगे। इनका सफ़र विद्यार्थियों के लिए भविष्य की राह बताने में मददगार होगा। लगभग पचास वक्ता छात्रों से रू ब रू होंगे।गत वर्ष भी लगभग इतने ही नामचीन पत्रकार, लेखक व रचनात्मक लेखन से जुड़े विशिष्ट लोग माखनपुरम में आए थे। कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने बताया कि इस अवसर पर 'दो सदी साक्षी'शीर्षक पुस्तक का विमोचन भी होगा। गत अभ्युदय में दो पुस्तकों माखन के लाल व कार्टून कथा का विमोचन हुआ था। विद्यार्थियों का एक न्यूज़रूम बनाया गया है जो हर दिन रिअल टाइम ख़बरें बनाकर समाचार पत्र 'विकल्प' का प्रकाशन करेगा व पॉडकास्ट और फ़िल्म बनाएगा

आज से 3 दिन अभ्युदय न्यूजरूम से प्रतिदिन 'विकल्प' का विशेष अंक

संसद यूथ पार्लियामेंट

12 राज्य
58 शहर
84 युवा

विधानसभा में गूंजे युवाओं के सवाल देश के मुद्दों पर मंथन

» आकाश नाथ कर 3MAAPR
म.प्र. विधानसभा से

मध्यप्रदेश विधानसभा में आयोजित संसद यूथ पार्लियामेंट 2.0 में देश के 12 राज्यों के 58 शहरों से आए 84 युवा प्रतिनिधियों ने लोकतंत्र, सार्वजनिक नीति और राष्ट्र निर्माण से जुड़े मुद्दों पर मंथन किया। दो दिन तक चले इस आयोजन में युवाओं ने सत्ता पक्ष और विपक्ष की भूमिका निभाते हुए संसदीय कार्यवाही का अनुभव प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने युवाओं को विकसित भारत के निर्माण का प्रमुख वाहक बताते हुए लोकतांत्रिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ विकसित करने पर जोर दिया। दूसरे दिन सदन में समान नागरिक संहिता (UCC) पर व्यापक बहस हुई। पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने महिलाओं के अधिकार, व्यक्तिगत कानून, उत्तराधिकार, जनजातीय समुदायों की चिंताओं और संवैधानिक मूल्यों से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे। बहस के दौरान लोकतांत्रिक संवाद, असहमति के सम्मान और संवैधानिक दृष्टिकोण की भावना भी दिखाई दी।

दो दिनों तक चले इस आयोजन ने युवाओं को संसदीय बहस, नीति निर्माण और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को करीब से समझने का अवसर दिया। आयोजन में शामिल युवा प्रतिनिधियों ने विभिन्न विचारों को सुनने, तर्क प्रस्तुत करने और लोकतांत्रिक तरीके से समाधान तलाशने का व्यावहारिक अनुभव हासिल किया।

कुलगुरु ने उठाए दो अहम मुद्दे

संसद यूथ पार्लियामेंट 2.0 के समापन सत्र में एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने युवाओं के सामने दो महत्वपूर्ण विषय रखे, सरकारी अवकाशों की संख्या और रिवर्स माइग्रेशन। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए मजबूत कार्य-संस्कृति जरूरी है। साथ ही शिक्षित और अनुभवी लोगों को गांवों की ओर लौटकर वहां नए अवसर और विकास की संभावनाएं तैयार करनी चाहिए। उन्होंने युवाओं से इन विषयों पर व्यापक सामाजिक विमर्श शुरू करने का आह्वान किया।

MCU छात्रों ने संभाली मीडिया और जनसंपर्क की कमान

संसद यूथ पार्लियामेंट 2.0 के आयोजन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका रही। विज्ञापन एवं जनसंपर्क विभाग के छात्र आकाश नाथ कर ने 5 सदस्यीय PIB एवं मीडिया-जनसंपर्क टीम का नेतृत्व किया। उनके साथ पत्रकारिता विभाग के चंद्रभान हिरवानी और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग की तनुश्री गुप्ता भी आयोजन समिति का हिस्सा रहे। तीनों विद्यार्थियों ने मीडिया कवरेज, प्रेस विज्ञप्तियों और जनसंपर्क गतिविधियों के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संपादक ने कहा-25 ग़लतियाँ करना

» कार्तिकेय पांडेय, 1MAJCW

भोपाल. विस्तार न्यूज रूम से। एक दिशाहीन युवक, जिसे ख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने इस समाज के लिए घातक कहा था, कैसा होता है ये जानने के लिए मुझे देखलेना काफी होगा। बस जब से मेरे गुरुजी श्रीमन तनुज मिश्र 'प्रांजल' जी जीवन में प्रवेश किया। दिशा और दशा ही बदल गई।

ज्यों ही गुरुजी ने दादा माखनलाल की बगिया में फूल के तरह लगाया, त्यों ही इस नवनिर्मित पुष्प को नर्सरी को सौंप दिया गया। नर्सरी यानी सच्ची पत्रकारिता करने वाला न्यूज चैनल विस्तार न्यूज। इसके संपादक ज्ञानेंद्र तिवारी अक्सर कहते हैं कि विस्तार न्यूज न ही नेशनल चैनल और न ही रीजनल, ये तो इमोशनल चैनल है और गुरुकृपा से मुझे ये अनुभव भी हुआ। इसका स्पष्ट माध्यम विस्तार न्यूज के ग्रुप एडिटर ब्रजेश राजपूत बने।

मुझे इस चैनल में जुड़े केवल 18 दिन हुए थे। बस समझ ही पाया था कि न्यूज चैनल, न्यूजरूम, पीसीआर, इनपुट डेस्क, आउटपुट डेस्क क्या होती है। श्वेता राय मेम कैसे भोपाल ऑफिस की नेत्री हैं। दुष्यंत सर और वैभव सर इनपुट डेस्क से क्या करते हैं। उधर रोहित और निशांत सर आउटपुट डेस्क को कैसे संभालते हैं। कैसे जितनी देर में मैं एक स्टोरी सोच पाता हूं उतनी देर में हिमांशु सर 3 स्टोरी लिख देते हैं। अमन सर, श्रेया और शुभांगी मेम कैसे प्रोडक्शन करवाते हैं।

यानी सरल भाषा में A,B,C,D समझ ही पाया था। एक रविवार को इत्मीनान से ऑफिस में बैठकर बुलटिन की खबरें लिख रहा था कि ज्ञानेंद्र तिवारी सर ने न्यूजरूम में कुछ ऐसा बोला कि मैं स्तब्ध रह गया। इससे पहले श्वेता मेम मौका कई बार कहती थी कि अब तुम्हे ऑनएयर करते हैं पर मैं ही कन्नी काट लेता था। अब ज्ञानेंद्र सर ने बुलाया और कहा," जाके तैयार हो जाओ तुम्हे अगला बुलेटिन पढ़ना है"। अगला बुलेटिन! मेरी सिट्टी पिट्टी गुम। अभी एक महीना हुआ नहीं था। काम समझ रहा था। सुबह शाम ऐंकरिंग का अभ्यास करता था और सर बोल पड़े तुझे अगला बुलेटिन पढ़ना है। जीवन का पहला बुलेटिन।

अब उस समय मेरी क्या स्थिति वो लिख नहीं सकता। बस पाठक ऐसे समझें कि कार सीख रहे एक कल के लड़के को कहा जाए कि तुम्हे परिवार को लेकर 200 किलोमीटर दूर आना है। विस्तार की विस्तृत विरासत और कल का आया मैं। खैर जैसे तैसे हिम्मत जुटाकर हिमांशु सर की अलमारी से डर डर के एक सदरी निकालकर बदन पर डाल ली। अच्छे से याद है कि दायां पैर झनझना रहा था। मुंह में लार का सूखा पड़ा था और तेज बज रहे ढोल की धुन की तीव्रता दिल में मची हुई थी। मैं तैयार होकरअपने गुरुजी को याद करके पीसीआर में खड़ा हुआ। बस तभी ज्ञानेंद्र जी आए। मैं सकपकाया खड़ा था कि सर आए और मुझे कसकर गले लगा लिया और बोले "आज तुझे अपने पहले बुलेटिन में 25 गलतियाँ करनी हैं। 25 से एक कम की तो डांट पड़ेगी। 25 की 25 गलतियाँ की तो शाबाशी दूंगा"। ये उस संपादक के शब्द थे जो अगर चाहता तो त्योरियां चढ़ा कर पीसीआर में बैठ कर मुझे ये महसूस करवाता कि मैं कैसी नालायकी की मूरत हूं।

ज्ञानेन्द्र सर लगातार पीसीआर में बैठकर मुझे जोश से भरते रहे। पीसीआर में मुझे रिलेक्स महसूस करने के लिए ज्ञानेन्द्र सर के साथ हिमांशु सर और अंजलि मेम भी थीं। जैसे जैसे मैं डर डर कर एक खबर पढ़ता तो सम्पादक जी इयरपीस पर बोलते "बहुत बढ़िया। अभी केवल 2 गलतियां हुई हैं। 23 और करनी है।

चमकती लकीरें

अब तक 44 इंटरव्यू

संस्कार शरण श्रीवास्तव, EM ने अपने डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म 'Rashtra Echo' के माध्यम से अब तक 44 इंटरव्यू किए हैं। इस दौरान मुझे समाज, राजनीति, शिक्षा और जनसरोकार से जुड़े अनेक व्यक्तित्वों से संवाद करने का अवसर मिला।अब तक मैंने 6 वर्तमान विधायक, 1 वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष, 4 वर्तमान नगर पंचायत/नगर पालिका अध्यक्ष, 2 मान्यता प्राप्त पत्रकार, 1 एम.बी.बी.एस. विद्यार्थी, 1 मुख्यमंत्री, राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत किसान, 1 पूर्व मंत्री, 1 पूर्व सांसद और 5 पूर्व विधायक एवं 1 पूर्व अध्यक्ष छात्र संघ इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय व 1 पूर्व अध्यक्ष छात्र संघ लखनऊ विश्वविद्यालय से संवाद किया है। इसके अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी, कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारियों के भी इंटरव्यू किए हैं।

नेकी कर दरिया में डाल

एमबीए के शिवम तिवारी ने ख़बर लिखी, जिसका श्रेय उनके बॉस को मिला। पत्रकारिता में कई बार आपके काम पर वरिष्ठों की वाह वाही होती है। पर जो 'नेकी कर दरिया में डाल' का सिद्धांत गाँठ बाँध लेते हैं, उन्हें मलाल नहीं होता। कई बार रिपोर्टर अपनी जिस ख़बर को बाइलाइन लायक़ समझता है, उसे नहीं मिलती। कई बार उसकी ख़बर रुक जाती है पर बाद में वही वरिष्ठ उन्हें आगे करता है, जिसने उसकी बाइलाइन या ख़बर को रोका। शिवम ने फैक्ट चैकिंग में अब ख़ासा दख़ल हासिल कर लिया है।

जब हमारी सराहना हुई

"माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय.. वहां के शिक्षक तो बड़े-बड़े पदों पर रहे हैं और वहां के बच्चे भी बहुत अच्छा काम करते हैं" ये मनभावन बोल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग की **छात्रा मांडवी सिंह** को इंटर्नशिप के लिए नवभारत समाचार पत्र समूह में पहुंचते ही सुनने को मिले। यह संपादक की टिप्पणी थी। वह याद करती हैं-मैं खुद को उस समय बिल्कुल "कच्ची मिट्टी" मानती थी। इंटरव्यू में जब मैंने बताया कि मैं माखनलाल से हूं तो वहां के एडिटर ने हौसला बढ़ा दिया। उनकी इस बात ने मेरे अंदर एक अलग तरह का भरोसा पैदा किया और मुझे वहां इंटर्नशिप का मौका मिल गया। मेरे शिक्षक मुझे लिखना सिखा चुके थे। लोगों के सामने बोलने में भी मुझे ज्यादा परेशानी नहीं होती थी।

दिल्ली विधानसभा के ब्यूरो ऑफ़ लेजिस्लेटिव स्टडीज में मुदित गोस्वामी (मीडिया प्रबंधन) ने रिसर्चर के रूप में हिस्सा लिया

माइक - कैमरा छीना, सवाल नहीं छीन पाए

» आयुष कुमार, 5B.Sc. EM

लखनऊ. न्यूज़ व्यूज के लिए मैदान से। प्रदर्शन के दौरान मैं मौके पर मौजूद था। वहां हो रही गतिविधियों को मैं कैमरे में रिकॉर्ड कर रहा था। इसी दौरान भारत विरोधी नारे लगाए जा रहे थे, जिन्हें मैंने कैमरे में कैद किया। मैं प्रदर्शन कर रहे लोगों से सवाल पूछकर उनका पक्ष जानने की कोशिश कर रहा था। लेकिन सवाल शुरू होते ही माहौल अचानक बदल गया।

कुछ लोग मेरे और मेरे कैमरापर्सन के साथ हिंसक हो गए। मुझे घेरकर मारपीट की गई और मेरा माइक छीन लिया गया। कैमरा भी जबरन ले लिया गया। कैमरे में उस समय की कई महत्वपूर्ण तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड हो चुके थे। उस वक्त एक पत्रकार के तौर पर मेरे सामने सबसे बड़ी चुनौती सिर्फ वहां से सुरक्षित निकलना नहीं थी, बल्कि यह समझना भी था कि एक सवाल किसी को इतना असहज क्यों कर सकता है कि वह सवाल पूछने वाले पर ही हमला कर दे। उस दिन मेरे हाथ पर चोट लगी थी, लेकिन उससे कहीं ज्यादा गहरा असर उस सवाल ने छोड़ा कि क्या सच को कैमरे में कैद करना इतना बड़ा अपराध हो सकता है कि पत्रकार पर ही हमला कर दिया जाए? मैं पढ़ाई के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रहा हूं। वर्तमान में News Views के माध्यम से उत्तर प्रदेश में राजनीतिक, सामाजिक और जनसरोकार से जुड़े मुद्दों की रिपोर्टिंग कर रहा हूं। इससे पहले The Newspaper TV के साथ भी ग्राउंड रिपोर्टिंग का अनुभव मिला। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान मुझे मध्यप्रदेश, दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे चार राज्यों में रिपोर्टिंग करने और 150 से अधिक विधानसभा क्षेत्रों को कवर करने का अवसर मिला है। इन वर्षों में मैंने कई घटनाओं को करीब से देखा और रिपोर्ट किया, लेकिन ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की मौत की खबर के बाद लखनऊ में हुए प्रदर्शन को कवर करने का अनुभव मेरे लिए सबसे अलग और चुनौतीपूर्ण रहा। कुछ स्थानीय लोगों ने मौके पर हस्तक्षेप किया और मुझे तथा मेरे कैमरापर्सन को वहां से सुरक्षित बाहर निकाला। उनके हस्तक्षेप ने स्थिति को और गंभीर होने से रोका। उस घटना ने मुझे पत्रकारिता की एक ऐसी सीख दी, जो शायद किसी किताब में नहीं मिल सकती। ग्राउंड पर पत्रकार सिर्फ खबर को कवर नहीं करता, कई बार वह खुद उस खबर का हिस्सा बन जाता है। कैमरा सिर्फ तस्वीरें रिकॉर्ड करने वाला उपकरण नहीं है; वह उस वक्त की सच्चाई का गवाह भी होता है।

ऐसे बनती है कहानी

दिल्ली.आईआईएमएमसी से। सेमेस्टर ब्रेक के दौरान कुछ करने का मन हुआ। कोई विषय खोजना शुरू किया। एक प्रोफेसर से बात की। उन्होंने एक ऐसी कहानी पर पिच तैयार करने का सुझाव दिया जिसका लोगों पर असर पड़ रहा हो। मैंने अपने आस-पास आइडिया खोजने शुरू किए। तभी एक ऐसी समस्या दिखी जिससे बहुत से लोग प्रभावित थे और इसमें सबसे ज़्यादा असर महिलाओं और बच्चों पर पड़ रहा था।

मैंने इस बारे में रिसर्च की, कुछ रिपोर्ट और लेख पढ़े, एक पिच तैयार की और उसे न्यूज़ एजेंसियों को ईमेल किया। मुझे एक-दो हफ़्ते इंतज़ार करना पड़ा, लेकिन उसके बाद मुझे एक जानी-मानी पब्लिकली लिस्टेड मीडिया टेक कंपनी से जवाब मिला। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया और मुझसे कहानी और उससे जुड़ी अन्य जानकारी साझा करने को कहा।

लोकल की भीड़ में पहला पाठ

» अक्षता माधव देशपांडे, MAMC 3

समाचार-कथा कहीं भी हो सकती है। मैं जब इंटर्नशिप के लिए NEWS 18 मराठी में जाती थी तो मुझे मुंबई की लोकल ट्रेन में ही कई कहानियां मिलती थीं।

मुंबई. News18 Marathi न्यूज़रूम से
मुंबई में हर दिन लाखों लोग अपने-अपने सपनों के साथ दौड़ते हैं। पिछले 45 दिनों में मैं भी इसी भागती हुई जिंदगी का हिस्सा रही। यह सफर मेरे लिए केवल एक इंटर्नशिप नहीं, बल्कि पत्रकारिता को करीब से समझने, उसे व्यवहार में सीखने और खुद को परखने का अवसर रहा। मुंबई को सपनों का शहर कहा जाता है, लेकिन मेरे लिए यह सीखने का शहर भी बन गया। मेरी पहली सीख न्यूज़रूम से नहीं, बल्कि मुंबई लोकल से मिली। ऑफिस आने-जाने में रोज लगभग चार घंटे का सफर होता था। लोकल की समय-सारणी ने मुझे समय की पाबंदी सिखाई, जबकि रोज साथ सफर करने वाले लोगों से बातचीत ने अलग-अलग जीवन, संघर्ष और अनुभवों को समझने का मौका दिया। धीरे-धीरे यह एहसास हुआ कि पत्रकारिता केवल खबर लिखने का नाम नहीं है; लोगों को देखना, सुनना और समझना भी उतना ही जरूरी है।

मेरी पढ़ाई को देखते हुए शुरुआत कानूनी खबरों से हुई। हर विषय की अपनी भाषा, अपनी शैली और अपनी जरूरत थी। इससे यह समझ विकसित हुई कि एक अच्छी खबर में तथ्य जितने महत्वपूर्ण हैं, उतनी ही महत्वपूर्ण उसकी प्रस्तुति, भाषा और पाठक की जरूरत को समझना भी है।

internship

क्लासरूम से

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के विद्यार्थी क्लासरूम से जो भी अनुभव लेकर गए, उन्होंने देश के विभिन्न संस्थानों में अनुभव लिया। जानिए, कैसा रहा उनका इंटर्नशिप का सफर...

सृष्टि कुमारी
बलिया से

एक बाइट से मिला आत्मविश्वास

उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह का बाइट लेने के लिए कहा गया। एक कैबिनेट मंत्री से इंटर्न से बात की। इसके पीछे विश्वविद्यालय में किए गए तमाम प्रोग्राम, कार्यक्रमों की कवरेज, कक्षा में हुई चर्चाएं, थ्योरी और बार-बार मंच साझा करने के अनुभव थे। उस दिन पहली बार मुझे महसूस हुआ कि विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाने वाली पत्रकारिता की थ्योरी और कक्षा की गतिविधियां सिर्फ पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं हैं।

शिवम तिवारी
दिल्ली से

इन्फोग्राफिक बने आफिशियल अकाउंट

इंटर्नशिप के दौरान एमबीए के विद्यार्थी शिवम तिवारी को पीटीआई में सोशल मीडिया पर भी काम करने का मौका मिला। उन्होंने पीटीआई इन्फोग्राफिक्स के एक्स (पूर्व में ट्विटर) अकाउंट को नये सिरे से संभालने का काम किया और इस दौरान करीब 58 इंफोग्राफिक्स पोस्ट किए। अब यह अकाउंट पीटीआई इन्फोग्राफिक्स का ऑफिशियल अकाउंट है। इंटर्नशिप के दौरान हम पेशेवर दुनिया में कदम रखते हैं।और हमारी पहली सफलता हमेशा याद रहती है।

ब्रिष्टि भट्टाचार्य
पुणे से

वर्क कल्चर का प्रैक्टिकल अनुभव

MAARS Creative Concept में इंटर्नशिप से एडवरटाइजिंग, ब्रांडिंग, डिज़ाइन, क्लाइंट से बातचीत और प्रोफेशनल वर्क कल्चर का प्रैक्टिकल अनुभव मिला। इसने मुझे अपनी पढ़ाई से मिली जानकारी को असल दुनिया के इंडस्ट्री के तरीकों से जोड़ने में मदद की और साथ ही मेरे क्रिएटिव और प्रोफेशनल स्किल्स को भी बेहतर बनाया। नए सफर की शुरुआत में मुझे हर महीने होने वाले R&R (रिवॉर्ड और रिकग्निशन) इवेंट्स में हिस्सा लेने में भी मज़ा आया, जिसमें बॉलिंग और मूवी देखने जाना शामिल था।

ऋषिका सिंह
वाराणसी से

शुरू हुई सीखने की नई यात्रा

वाराणसी के प्रमुख और सबसे पुराने समाचार पत्रों में से एक 'आज' में इंटर्नशिप की। यह किताबों से मिली सीख को वास्तविक पत्रकारिता की दुनिया में अनुभव करने और हर दिन कुछ नया सीखने की एक नई यात्रा की शुरुआत थी। इंटर्नशिप के दौरान मेरे लिए सबसे अधिक सहायक कॉलेज में कराई जाने वाली न्यूज़ आर्टिकल लेखन की प्रैक्टिस और वे सभी छोटी-छोटी बातें रहीं, जिन पर हमारे शिक्षक हमेशा ध्यान देने के लिए कहते थे। अपने सपनों और लक्ष्यों को ध्यान रखकर मैं अपनी यात्रा का सफर तय करती रही।

पृथा पांडे
बैंगलोर से

अनुशासन, जवाबदेही और समय प्रबंधन

बैंगलोर स्थित डिजिटल मार्केटिंग कंपनी 'वायरल विचार' (Viral Vichar) के साथ काम कर रही हूं। मेरे प्रोफ़ेसरों ने हमेशा मुझे ऐसे क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया है जो आने वाले पाँच सालों में भी प्रासंगिक बने रहें। उनकी सलाह और सीख ने पढ़ाई के दौरान मुझे बहुत सी बहुमूल्य बातें सिखाईं। मेरी सबसे बड़ी सीखों में से एक क्लाइंट को संभालना रहा है। चूँकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए घर से काम कर रही हूँ, इसलिए दोनों ज़िम्मेदारियों को संभालने से मुझे अनुशासन, समय प्रबंधन और जवाबदेही भी सीखने को मिली है

अभिनव कुमार

पहली इंटर्नशिप, पहली वेब सीरीज़

अभिनव कुमार, पिछले दो महीनों के दौरान व्यावसायिक सिनेमा से लेकर इंडिपेंडेंट फ़िल्म मेकिंग तक का सफर मेरे लिए सीखने का एक बेहतरीन अनुभव रहा। 'वध 2' व वेब सीरीज़ में बतौर असिस्टेंट सिनेमाटोग्राफर काम करना मेरे लिए पहला इतना बड़ा प्लेटफॉर्म था। 15 दिन लगातार रात की शिफ्ट में काम करना पड़ा। 'प्रीपेड मोक्ष' की शूटिंग एक वास्तविक श्मशान घाट में हुई, जो मेरे लिए बहुत बड़ा चैलेंज था। लोकेशन रैकी से लेकर शूटिंग के दौरान अचानक हुई बारिश ,इन सभी चीज़ों को मैंने कमर्शियल सेट से मिले अनुभव की मदद से सीमित संसाधनों में भी सफलता से मैनेज किया।

Learning Today
Leading Tomorrow

न्यूज़रूम तक

पहली बार कैमरा फेस करना, पहली स्क्रिप्ट, उच्चारण में गलतियां, यह हुआ... यह बार-बार हुआ। लेकिन कोई भी परेशानी इन्हें डिगा नहीं पायी क्यूंकि ये एक ही लक्ष्य लेकर चले थे...

लर्निंग

अदिति
नोएडा से

मील का पत्थर रही है यह इंटर्नशिप

इंडिया टुडे प्रोडक्शन कंट्रोल रूम (पीसीआर) विभाग में इंटर्नशिप की। यहां अनुभवी पेशेवरों के साथ काम करने से मुझे न्यूज़रूम संचालन, टीम वर्क और समय सीमा के तहत सटीकता के महत्व की व्यावहारिक समझ मिली। मेरी इंटर्नशिप अकादमिक और पेशेवर यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर रही है, जिसने मुझे डिजिटल पत्रकारिता और प्रसारण मीडिया में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। मेरे लिए सबसे अच्छा अनुभव यह रहा कि मैं जिस दिशा में जाना चाहती थी, उसी उस तरफ मेरा पहला कदम बढ़ा ।

नंदिनी
रायगढ़ से

अनुभव ही है असली पाठशाला

अनुभव आपको किसी भी कक्षा की तुलना में अधिक सिखाते हैं। उनकी एक महीने की जिंदल स्टील लिमिटेड, रायगढ़ में इंटर्नशिप ऐसा ही एक अनुभव था। शुरुआत में, मैं थोड़ा नर्वस थी क्योंकि चारों ओर सब कुछ नया था कार्यस्थल, लोग, औद्योगिक वातावरण और जिम्मेदारियां। लेकिन धीरे-धीरे सहज हो गईं और सीखने की प्रक्रिया का आनंद लेने लगीं। पीछे मुड़कर देखें, मेरी इंटर्नशिप केवल एक अनिवार्य शैक्षणिक आवश्यकता से कहीं अधिक थी। और फील्ड में लिया गया अनुभव ही असली पाठशाला है।

स्तुति
भोपाल से

जारी है गलतियों से सीखना

जनवरी में मैंने S O C I Y O Communications में एक महीने की इंटर्नशिप की । इससे पहले पब्लिक रिलेशंस के क्षेत्र में काम नहीं किया था। किताबों और कक्षा में पढ़ी गई चीजों को वास्तविक काम के साथ जोड़ने के लिए मुझे एक व्यावहारिक अनुभव चाहिए था। एक महीने के उस शुरुआती अनुभव में मैंने कई बुनियादी लेकिन महत्वपूर्ण चीजें सीखीं - किसी विषय पर सही तरीके से रिसर्च करना, क्लाइंट की जरूरत के अनुसार कंटेंट तैयार करना और स्क्रिप्ट लिखना। बहुत सारी गलतियाँ की, अभी भी करती हूँ, लेकिन सीखती रहती हूँ

आदित्य रंजन
भोपाल से

पीआर की मास्टरक्लास

पहली बार मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेडके दरवाजे से कदम रखा तो पता था कि एक विशाल राज्य बिजली उपयोगिता के लिए संचार का प्रबंधन एक चुनौती होगी। केवल तीस दिनों में, एमपीकेवीवीसीएल में मेरी इंटर्नशिप एक सीखने के अनुभव से एक मास्टरक्लास में बदल गई। पीआर केवल बयान भेजने के बारे में नहीं है; यह लाखों लोगों को दैनिक समय सीमा में सूचित, सुरक्षित और जुड़े रखने के लिए पारंपरिक मीडिया और डिजिटल रणनीति को एक साथ बुनना है।

अभिषेक पांडेय
लखनऊ से

सीखने की भूख ही बढ़ाती है आगे

मैं निलेश मिसरा की टीम के साथ 'गांव कनेक्शन' में मल्टीमीडिया जर्नलिस्ट के तौर पर काम कर रहा हूं। यहां काम करते हुए डिजिटल पत्रकारिता के साथ-साथ मल्टीमीडिया स्टोरीटेलिंग और ग्राउंड रिपोर्टिंग को एक नए नजरिए से समझने का मौका मिल रहा है। एक अच्छा न्यूज़रूम वही होता है जहां सीखने की भूख हो। आप जूनियर हैं तो यह सोचना नहीं चाहिए कि आपको सब आता है। अपने सीनियर्स के काम करने के तरीके को देखिए, सवाल पूछिए और फीडबैक लीजिए।

अभिनय चौहान

लाइट्स, ईपी, पीसीआर और एंकरिंग

अभिनय चौहान, अनादि टीवी के साथ जुड़कर एंकरिंग और रिपोर्टिंग की। टीवी के साथ काम करते हुए मुझे यह गहराई से समझ आया कि टीवी पत्रकारिता सिर्फ कैमरे के सामने खड़े होकर स्क्रीन पर खबरें पढ़ देने भर का नाम नहीं है। यह उससे कहीं आगे—दर्शकों की नब्ज समझने, मुद्दों की गहराई में उतरने और सही शब्द चयन के साथ सटीक बात पहुँचाने की कला है। स्टूडियो की लाइट्स, ऑन-एयर काउंटडाउन और कानों में बजते ईपी (Earpiece) पर पीसीआर (PCR) टीम के निर्देश—इन सब के बीच संतुलित रहकर डिबेट का संचालन करना एक अलग ही अभ्यास है।

INTERNSHIP

भ्रामक खबर, सच की नजर

» नई दिल्ली, पीटीआई न्यूज रूम से हर्ष कर्णवाल, MAMC

नई दिल्ली. पीटीआई न्यूज रूम से। देश की बड़ी समाचार एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया में इंटर्नशिप की पीटीआई जैसे संस्थान सिर्फ़ खबर नहीं दिखाते, वे खबर की तह तक जाते हैं। पहले दिन पीटीआई के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय पहुंचा तो ऑफिस और वहां का माहौल देखकर मन में एक किस्म का संकोच पनपा। अनुभवी पत्रकारों के बीच काम करने को लेकर थोड़ी झिझक थी। शुरुआती दिनों में न्यूज़रूम में छोटी-मोटी गलतियां माफ़ भी की गईं, लेकिन गलतियों की पुनरावृत्ति पर सीनियर्स द्वारा अंतिम समझाइश भी दी गई। पीटीआई में इंटर्नशिप के दौरान मुझे डिजिटल डेस्क मिली। इस दौरान समझ आया कि आज के डिजिटल न्यूज़रूम में सिर्फ़ अच्छा लिखना ही काफी नहीं है, बल्कि मल्टीस्किल्ड होना भी जरूरी है। जंतर-मंतर जाकर सीजेपी आंदोलन को ग्राउंड पर कवर करने का मौका मिला। आंदोलन के दिनों में कई जाली सोशल मीडिया अकाउंट्स से भ्रामक खबरें तैर रही थीं। न्यूज़रूम में मुझे ऐसी खबरों पर स्टोरी फाइल करने के लिए कहा गया, जो भ्रामक थीं।

ऐसे ही मेरे ऑफिस पहुँचने के बाद एक सुबह पीटीआई न्यूज़रूम में हमारे नेटवर्क के माध्यम से ही एक भ्रामक खबर दाखिल हुई, जिसका शीर्षक था- "धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद भी CJP संस्थापक अभिजीत दीपके जंतर-मंतर से नहीं हटे। यह खबर पूरी तरह भ्रामक थी। मैंने और सीनियर आशीषा सिंह राजपूत ने पीटीआई फैक्ट चेक के माध्यम से इस भ्रामक खबर के पुर्जे खोले और खबर की सच्चाई को उजागर किया। आजकल हम सभी सोशल मीडिया पर किसी भी पोस्ट, तस्वीर या वीडियो को किसी दावे के साथ देखते हैं और बिना सोचे-समझे उसे शेयर कर देते हैं। जबकि जरूरी नहीं कि वह जानकारी सच ही हो। एक महीने में मुझे चार बायलाइन मिलीं। लेकिन मेरे लिए सबसे खास बात बायलाइन नहीं, बल्कि इस दौरान मिली सीख रही। मैंने गलतियां भी कीं, उनसे सीखा भी और हर दिन खुद को थोड़ा बेहतर बनाने की कोशिश की। पीटीआई से मिली यह सीख मेरे पत्रकारिता जीवन की मजबूत नींव बनेगी।

जब दुआओं में देखी पत्रकारिता की सार्थकता

» साक्षी शांडिल्य, MA(DJ)

नोएडा. जी न्यूज से । कोई मुझसे पेंशन न मिलने की शिकायत करता तो कोई गाँव की टूटी सड़क को सुधारने की गुहार लगाता। मैं इसे संबंधित अधिकारी के समक्ष रखती और समाधान कराती। इस पर पीड़ित का आशीर्वाद मिलता-बेटा, भगवान तुम्हें खुश रखे, मेरी उम्र भी तुम्हें लग जाए। यह सब फ़ोन पर होता है।

ज़ी न्यूज़ की हेल्पलाइन में काम करते हुए मैं रोज़ ऐसे अनुभव से गुज़रती हूँ। जब लोग अपनी समस्या का समाधान पा जाते हैं तो कुछ दुआएं हमारे हिस्से में भी आती हैं। ऐसे आशीर्वाद किसी पुरस्कार से कम नहीं होते। कई बार लोग भावुक होकर कहते हैं कि 'आज भी पत्रकारिता ज़िंदा है, क्योंकि किसी ने हमारी बात सुनी और हमारी मदद की।' यही वे क्षण हैं, जो मुझे हर दिन और अधिक जिम्मेदारी, संवेदनशीलता और ईमानदारी के साथ काम करने की प्रेरणा देते हैं।

पत्रकारिता को मैंने कभी केवल एक करियर नहीं,बल्कि सत्य की निरंतर खोज का माध्यम समझा है और इस सोच के साथ जब मैंने मास्टर ऑफ डिजिटल जर्नलिज्म की पढ़ाई पूरी की, तब मेरे मन में एक ही संकल्प था कि मैं ऐसी पत्रकार बनूँगी जो केवल ख़बरें न दिखाए, बल्कि जनता की आवाज़ बनकर समाज मे सार्थक बदलाव लाए। इस विश्वास को साथ लेकर मुझे Zee News में इंटर्नशिप करने का अवसर मिला। वहाँ मेरी जिम्मेदारी Zee Helpline से जुड़ी हुई थी,यहां आने के बाद मेरा हर दिन एक नई जिम्मेदारी के साथ शुरू होता है। देश के विभिन् हिस्सों से लोग अपनी समस्याएँ व्हाट्सएप और ईमेल के माध्यम से मेरे पास पहुँचाते हैं। मेरी प्रमुख जिम्मेदारी उन शिकायतों को दर्ज करना और उनकी तथ्यात्मक जाँच करना, संबंधित विभागों तक पहुँचाना और समाधान होने तक लगातार फॉलो-अप करना है। मेरे कार्यकाल के दौरान अब तक लगभग 20 जनसमस्याओं के समाधान करने में मुझे सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिला है।

जब मैं किसी आम नागरिक की आवाज़ लेकर अधिकारियों से बात करती हूँ, तो मेरा उद्देश्य होता है—जनहित के मुद्दे को गंभीरता के साथ रखना और यह सुनिश्चित करना कि जिस जिम्मेदारी के लिए प्रशासनिक व्यवस्था बनाई गई है, वह ज़मीन पर प्रभावी रूप से निभाई जाए। मुझे हमेशा यह महसूस हुआ कि पत्रकारिता केवल सवाल पूछने का माध्यम नहीं, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच जवाबदेही का एक सशक्त पुल भी है।

इन बीस मामलों में कई ऐसे अनुभव रहे, जिन्होंने मुझे भीतर तक प्रभावित किया। उन में से एक था,अमरोहा के अधिवक्ता अमित खंडेलवाल का उन्होंने हेल्पलाइन पर संपर्क कर मुझे बताया कि उनके क्षेत्र की सड़क लगभग दस वर्षों से जर्जर पड़ी हुई है और टूटी हुई नालियाँ, क्षतिग्रस्त पुल और बदहाल रास्तों के कारण आए दिन दुर्घटनाएँ होती रहती है। शिकायत मिलने के बाद मैंने संबंधित अधिकारियों से लगातार संवाद किया, आवश्यक फॉलो-अप किया और अंततः समस्या के समाधान की दिशा की ओर कार्रवाई शुरू हुई।

टीवी न्यूज ने सिखा दिया 'स' सड़क का, 'श'शक्कर का

» दखल न्यूज़ भोपाल से वंदना सिंह, MAJ 2

'स' और 'श' सहित कुछ ध्वनियों के उच्चारण में मुझसे गलतियाँ होती थीं। पहले जिन संस्थानों में काम किया, वहाँ इन गलतियों पर मेरा विशेष ध्यान नहीं दिलाया गया। दखल न्यूज़ में मुझे लगातार सुधारने के लिए कहा गया। शुरुआत में यह मेरे लिए कठिन था, क्योंकि गलतियों पर मुझे डांट भी सुननी पड़ती थी। कई बार मैं ऑफिस जाने से पहले डरती थी। पूरे दिन ही एक तरह का दबाव और डर बना रहता था। लेकिन मैंने हार नहीं मानी।

पर मैंने डांट को व्यक्तिगत लेने की बजाय उसे सीखने का माध्यम बनाया। अगर मुझे पत्रकारिता में आगे बढ़ना है तो मुझे अपनी कमियों को स्वीकार करके उन्हें सुधारना होगा। इसलिए चाहे मन कितना भी भारी हो, चाहे कितनी भी बार डांट पड़े, मैं अगले दिन फिर ऑफिस जाती थी और सीखने की कोशिश करती थी। धीरे-धीरे मैंने अपने उच्चारण पर काम किया और आज मैं बहुत आत्मविश्वास के साथ बोल सकती हूँ कि मेरी भाषा और उच्चारण में काफी सुधार आया है। आज लोग मुझे कहते हैं कि मैं अच्छा वॉइसओवर करती हूँ । उन कठिन परिस्थितियों ने मुझे मजबूत बनाया। मैं वर्ष 2022 में बिहार से भोपाल आई। पत्रकारिता स्नातक की पढ़ाई के दौरान भोपाल के कुछ लोकल न्यूज़ चैनलों के साथ काम किया, लेकिन मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण और सबसे ज्यादा सीख देने वाला अनुभव दखल न्यूज़ के साथ रहा।

दखल न्यूज़ भोपाल का एक छोटा लोकल न्यूज़ ऑर्गनाइजेशन है, जहाँ लगभग 12–15 लोगों की टीम मिलकर काम करती है। मेरा अनुभव सकारात्मक था तो चुनौतीपूर्ण भी। मैथिली भाषी होने के कारण मेरे उच्चारण में कुछ ऐसी भाषाई समस्याएँ थीं, जो सामान्य हिंदी से थोड़ी अलग थी।

कार्यक्रमों के विलंब से ऊबिए नहीं

» संकल्प के कक्ष से, तोषिका गुप्ता, MBA 3

भोपाल. संकल्प के कक्ष से। कोई भी ईवेंट समय पर नहीं होती। यह हमारे आयोजनों का दुखद पक्ष है लेकिन ईवेंट मार्केटिंग और मैनेजमेंट में इससे धैर्य के साथ निपटना होता है। यह मैंने अपनी इंटर्नशिप के दौरान समझा। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने मुझे क्लासरूम में सीखी गई बातों को मीडिया की असल दुनिया से जोड़ने में मदद की। मैंने 'संकल्प-द सिविल सर्विसेज़ सोसाइटी ऑफ़ इंडिया' के साथ कंटेंट क्रिएटर के तौर पर अपनी इंटर्नशिप सफलतापूर्वक पूरी की। मीडिया मैनेजमेंट के MBA स्टूडेंट के तौर पर मैं क्लासरूम में सीखी गई कॉन्सेप्ट्स और स्किल्स को असल ज़िंदगी की स्थितियों में लागू कर पाई। मुझे बॉलीवुड एक्ट्रेस मौनी रॉय की मौजूदगी में GBAA 2026 में 'ग्लोबल क्रिएटर अचीवर अवॉर्ड' मिला। 'बियॉन्ड रिवाज़' में भी मेरे काम और योगदान के लिए सम्मानित किया गया। 'सीक्रेट ऑफ़ सेलिब्रिटी मेकअप – CGF सीज़न 4' में, मुझे इवेंट के कंटेंट क्रिएटर और इन्फ्लुएंसर के तौर पर मेरे योगदान के लिए पहचान मिली। एक और यादगार उपलब्धि 'अस्तित्व विमेंस प्राइड अवॉर्ड्स 2026' में एक जर्नलिस्ट और कंटेंट क्रिएटर के तौर पर सम्मानित होना था। इन अनुभवों ने मुझे सिखाया है कि पढ़ाई-लिखाई तभी सच में सार्थक होती है जब उसे असल दुनिया में लागू किया जाए।

बचपन का उल्टा अखबार, पत्रकारिता का सीधा सबक

MAJ 4 के विद्यार्थी और विकल्प का कुशलता पूर्वक संपादन करने वाले अंकित आनंद ने भोपाल में गर्मियों में टाइम्स आफ इंडिया मैं इंटर्नशिप की। इस दौरान उन्होंने चार विभिन्न महत्वपूर्ण और संवेदनशील घटनाओं की रिपोर्टिंग करते हुए पत्रकारिता और जीवन के मंत्र सीखे। अनुभवों को उन्होंने विस्तार से कलमबद्ध किया है। इनमें से एक अनुभव अपने विद्यार्थी पाठकों के लिए

पटना. कुछ सपने बहुत पहले, चुपचाप हमारे जीवन में आते हैं, उससे भी पहले जब हम उन्हें पहचानने लायक बड़े होते हैं। मेरा सपना एक ऐसे अख़बार से शुरू हुआ जिसे मैं पढ़ भी नहीं सकता था। मेरी माँ अक्सर मेरे बचपन की एक कहानी सुनाती हैं जो अब हमारे परिवार की लोककथा का हिस्सा बन चुकी है।

मैं 3 साल का था जब वह मुझे नवरात्रि की खरीदारी के लिए लेकर गईं, एक ऐसा त्योहार, जिसका हमारे घर में हमेशा मतलब होता था नए कपड़े खरीदना। जब मेरी माँ और बड़ी माँ कपड़े चुनने में व्यस्त थीं, मैं उस निडर जिज्ञासा के साथ इधर-उधर घूमने लगा, जो केवल बच्चों में होती है। बिलिंग काउंटर पर अख़बारों का एक ढेर रखा था। उनमें से एक The Times of India था। मैंने उसे उठाया और पढ़ने का नाटक करने लगा। दुकानदार मुस्कुराया और पूछा, 'क्या तुम्हें अख़बार पढ़ना आता है?' मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, 'हाँ।' इससे पहले कि मैं अपना अभिनय आगे बढ़ा पाता, मेरी माँ हँसते हुए काउंटर पर पहुँचीं और उन्होंने दुकानदार से कहा 'यह अख़बार उल्टा पकड़े हुए है। 'सब हँस पड़े, जिसमें दुकानदार भी शामिल था, जिसने मेरी पढ़ने की क्षमता से अधिक मेरे आत्मविश्वास की सराहना की।

मुझे उस शाम की कोई याद नहीं है, फिर भी यह कहानी मेरे बचपन के दौरान मेरे साथ रही। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैंने उस अख़बार के ऊपर छपे नाम को कभी नहीं भुलाया जिसे मैं पकड़े हुए था- The Times of India। वर्षों बाद, मैं उसी अख़बार के न्यूज़रूम में एक इंटर्न के रूप में पहुँचा। यह संयोग से कम और ऐसा अधिक लगा जैसे जीवन चुपचाप एक चक्र पूरा कर रहा हो।

उन महीनों के दौरान, मैं ऐसे निवासियों से मिला जिन्होंने वर्षों तक बिना सफलता के सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाए थे। अंततः उनमें से कई पत्रकारों के पास आए, इसलिए नहीं कि उन्हें विश्वास था कि पत्रकारों के पास कोई असाधारण शक्ति है, बल्कि इसलिए कि उन्हें उम्मीद थी कि आखिरकार कोई उन्हें सुनेगा। उस उम्मीद ने पत्रकारिता की मेरी समझ बदल दी। जब भी मैं उस छोटे बच्चे के बारे में सोचता हूँ जो आत्मविश्वास के साथ एक अख़बार उल्टा पकड़े हुए था, मैं मुस्कुराए बिना नहीं रह सकता। उसे नहीं पता था कि पत्रकारिता का मतलब क्या होता है। लेकिन कहीं न कहीं, बिना जाने ही, उसने एक ऐसी यात्रा शुरू कर दी थी जो उसे अंततः यह सिखाने वाली थी कि अख़बार केवल छपे हुए पन्नों के बंडल नहीं होते। वे लोगों के संघर्षों, आकांक्षाओं और सच्चाइयों के रिकॉर्ड होते हैं।जिस अख़बार को मैंने कभी उल्टा पकड़ा था, उसने अंततः मुझे एक पत्रकार के रूप में सीधे खड़ा होना सिखाया।

ट्विशा केस से सीखा कब पीछे हटना है

सबसे महत्वपूर्ण सबक में से एक ट्विशा शर्मा केस से आया। मेरा असाइनमेंट ट्विशा के पिता से बात करना था। उस समय परिवार AIIMS भोपाल में था। यह पहली बार था जब मेरा सीधा सामना ऐसे परिवार से हुआ जो इस तरह के संकट से गुजर रहा था। मैंने उन्हें फोन किया और अपना परिचय दिया। जैसे ही उन्हें पता चला कि मैं अख़बार से फोन कर रहा हूँ, वह रोने लगे। मैं हिल गया। तब तक, मैं ऐसे मामलों से अधिकतर रिपोर्टों, बयानों और अकादमिक चर्चाओं के माध्यम से ही परिचित था। यह अलग था। मेरे और कहानी के केंद्र में मौजूद व्यक्ति के बीच कोई दूरी नहीं थी। मैं किसी के दुख को वास्तविक समय में सुन रहा था। और मैंने एक गलती की। मैंने उस भावना को अपनी रिपोर्टिंग तय करने दी। मुझे यकीन हो गया कि ट्विशा की हत्या हुई थी। मेरे मन में, उसके पिता के आँसू किसी और अधिक गंभीर घटना के सबूत बन गए। मैंने जो कॉपी लिखी, उसमें वही विश्वास दिखाई दे रहा था। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो वह रिपोर्ट कम और फैसला अधिक लगती थी। आशुतोष शुक्ला सर ने उसे पढ़ा और मुझे रोक दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि रिपोर्ट दोबारा लिखो, बिना किसी व्यक्ति का नाम लिए और बिना कोई फैसला सुनाए। अगली सुबह, मैंने उनसे पूछा कि क्यों? उन्होंने बताया कि मैंने अपनी भावना को अपना निष्कर्ष तय करने दिया था। बेटी की मौत के बाद एक पिता का रोना स्वाभाविक था। लेकिन उसका दुख उसकी मौत के कारण को स्थापित नहीं कर सकता था। मैंने एक पक्ष सुना था और अनजाने में उसे पूरी सच्चाई मान लिया था।उन्होंने बस इतना कहा- 'हम धारणाओं पर काम नहीं करते। हम कानून-प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा पुष्टि किए गए सबूतों पर काम करते हैं।' वह वाक्य मेरे साथ रह गया। तभी मुझे कुछ ऐसा समझ आया जिसे मैं इसके बाद आने वाली हर कहानी में अपने साथ लेकर चलता रहाः सहानुभूति एक पत्रकार को यह बता सकती है कि किसी का दर्द क्यों मायने रखता है, लेकिन यह पत्रकार को यह नहीं बता सकती कि वास्तव में क्या हुआ। यह सबूत को करना होता है। सबक यह नहीं था कि महसूस करना बंद कर दिया जाए। सबक यह था कि कब पीछे हटना है, यह सीखना।

TOI में चैतन्य और रोहित की बायलाइन

चैतन्य शाह, MJMC

रिपोर्टिंग एक आसान काम नहीं है। आपको हलचल करनी होगी, लीड का पीछा करना होगा, प्रश्न पूछना होगा और कहानी प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त मील जाना होगा।' ये मेरे इंटर्नशिप के पहले दिन मेरे मेंटर के शब्द थे। और लगता है क्या, यह 100 प्रतिशत सच था। द टाइम्स ऑफ़ इंडिया में एक रिपोर्टिंग इंटर्न के रूप में काम करना, भारत का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला अंग्रेज़ी समाचार पत्र और दुनिया का सबसे अधिक बिकने वाला अंग्रेज़ी भाषा का दैनिक, एक सपने के सच होने से कम नहीं था। उस सपने के साथ जिम्मेदारियां और सीख आई जो अनमोल थीं। जब कॉलेज में, हमारे प्रोफेसर हमेशा कहते थे कि प्रिंट मीडिया में काम करते हैं, तो आप बहुत कुछ सीखेंगे, केवल मुझे एहसास हुआ कि यह कितना सच था।

Dug-up roads, infra works create pitfalls
NEW & OLD STRETCHES GO DOWN THE DRAIN
Chaitanya Shah & Rohit Tiwari
Residents say that neither the roads being converted to CC roads have been properly designed and aligned nor the non-CC dilapidated roads have been repaired in the rainy season, which over the years have seen umpteen potholes surfacing

रोहित तिवारी, MADJ 3

अपनी इंटर्नशिप के दौरान, मैंने सीखा कि एक मज़बूत समाचार भावना कैसे विकसित की जाए, प्रभावशाली कहानियों की पहचान करें, और सार्वजनिक मुद्दों पर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए कई हितधारकों को शामिल करें। मैंने पूरी रिपोर्टिंग प्रक्रिया के लिए व्यावहारिक प्रदर्शन भी प्राप्त किया, कहानी के कोणों की पहचान करने से लेकर साक्षात्कार आयोजित करने, जानकारी सत्यापित करने और संतुलित, तथ्य-आधारित रिपोर्ट पेश करने तक। इन असाइनमेंट ने मुझे सरकारी अधिकारियों, सार्वजनिक प्रतिनिधियों और अन्य प्रमुख हितधारकों का साक्षात्कार करने का अवसर दिया, जिससे मुझे एक अधिक आत्मविश्वास और सक्षम रिपोर्टर बनाते हुए मेरी रिपोर्टिंग, संचार और क्षेत्र पत्रकारिता कौशल में काफ़ी मजबूती मिली।

9 टीवी स्क्रीन पर एक साथ नजर रखती थी

श्वेता कुमारी, BAJCW

भोपाल. पत्रकारिता को बाहर से देखने पर यह खबर लिखने, कैमरे के सामने बोलने या किसी आयोजन की रिपोर्टिंग करने का पेशा लगता है, लेकिन न्यूजरूम और फील्ड में उतरने के बाद समझ आता है कि एक खबर के पीछे कितनी जिम्मेदारियां और कितनी मेहनत होती है। मेरी पत्रकारिता यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही -वॉइसओवर और कंटेंट राइटिंग से शुरू होकर टेलीविजन, डिजिटल एंकरिंग, बिजनेस न्यूज और संस्कृति की रिपोर्टिंग तक।

प्रदेश टुडे में मैंने वॉइसओवर आर्टिस्ट और कंटेंट राइटर के तौर पर काम किया। इसके बाद दैनिक जागरण की परीक्षा पास कर ट्रेनी के रूप में काम किया। दिल्ली में मेरी पहली इंटर्नशिप भारत 24 के मॉनिटरिंग डिपार्टमेंट में हुई। मेरा काम एक साथ नौ टीवी स्क्रीन पर नजर रखना था। किस चैनल पर क्या चल रहा है, ब्रेकिंग न्यूज आई है या किसी नेता का बयान आया है-हर चीज पर नजर रखनी होती थी। यहां समझ आया कि टीवी पत्रकारिता में समय की कितनी अहमियत है और कई बार कुछ सेकंड भी महत्वपूर्ण होते हैं। एबीपी न्यूज दिल्ली के डिजिटल प्लेटफॉर्म 'पैसा लाइव' के साथ काम करने का अवसर मिला। रिपोर्टिंग के दौरान मेरी सबसे बड़ी सीख रही कि हर स्टोरी के लिए कहीं जाना जरूरी नहीं होता। लोगों से जुड़ना, नेटवर्किंग करना और हर दिन नया स्टोरी आइडिया तलाशना पत्रकारिता का अहम हिस्सा है।

मेरी तस्वीर यहाँ लग पाएगी?

दो दिन पहले ही मेरे जूनियर का व्हाट्सएप पर मैसेज आया। उसने यूनिवर्सिटी के मेन गेट पर लगी प्लेसमेंट में चयनित हुए विद्यार्थियों वाली पोस्टर की एक तस्वीर भेजी है, जिस पर मेरा नाम और मेरी तस्वीर दो जगह चस्पाँ है। उसने सवाल लिखा है 'दीदी, क्या कभी मेरी भी तस्वीर यहाँ लग पाएगी?'

» सृष्टि झा, 1 MAJCW

लखनऊ. अमर उजाला न्यूजरूम से । साल 2021 में मैं पहली बार दाखिले के बाद विश्वविद्यालय पहुँची, तो विश्वविद्यालय के मेन गेट पर एक पोस्टर में प्लेसमेंट में चयनित सीनियर्स के नाम और उनकी तस्वीर लगी देख मन में एक सवाल स्वतः आया कि क्या कभी मेरी भी तस्वीर यहाँ लग पाएगी? यह सवाल चार साल तक मेरे मन में अलग-अलग तरीकों से तब तक गूँजता रहा, जब तक अंतिम वर्ष में प्लेसमेंट ड्राइव की शुरुआत नहीं हुई। इस प्लेसमेंट ड्राइव में मेरा चयन 'विस्तार न्यूज' में हो गया।

मैं वहाँ ज्वाइन करने ही वाली थी, लेकिन तभी मुझे पता चला कि मेरा चयन 'अमर उजाला' की लिखित परीक्षा में भी हो गया है और साक्षात्कार तथा सामूहिक चर्चा के लिए मुझे नोएडा बुलाया गया है। चूँकि लिखित परीक्षा के बाद लगभग 150 बच्चों में से केवल 12 बच्चों को ही साक्षात्कार के लिए चुना गया था, इसलिए खुशी के साथ-साथ मेरे मन में एक डर भी था कि क्या मैं इसमें सफल हो पाऊँगी, क्योंकि अमर उजाला में नाम आने के बाद मैंने विस्तार न्यूज का विकल्प भी छोड़ दिया था। खैर मेरा चयन आखिरकार अमर उजाला की लखनऊ यूनिट में हुआ। सच कहूँ तो, जब मैं पहले दिन यहाँ आई थी, तो भीतर से बहुत डरी हुई थी। मन में यही चल रहा था कि मुझे तो प्रोफेशनल काम का कोई व्यावहारिक अनुभव ही नहीं है, मैं यहाँ कैसे तालमेल बिठा पाऊँगी? लेकिन पहले दिन ही मेरा सारा डर गायब हो गया, क्योंकि यहाँ के लोग इतने अच्छे और मददगार हैं कि उन्होंने मुझे बहुत सहज महसूस कराया। सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ मेरे साथ भारतीय जनसंचार संस्थान (IIMC) नई दिल्ली, लखनऊ यूनिवर्सिटी और बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी (BBAU) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से आए अन्य विद्यार्थी भी प्रशिक्षण ले रहे हैं। इन सभी सहकर्मियों का साथ दफ्तर के माहौल और सीखने के इस सफ़र को और भी दिलचस्प बना रहा है।

अमर उजाला में मुझे हर दिन कुछ नया सीखने का अवसर मिलता है। दिन की शुरुआत अखबारों के अध्ययन और उनकी समीक्षा से होती है। संपादक विजय त्रिपाठी सर खबर लेखन की बारीकियां सिखाते हैं। सीनियर एसोसिएट एडिटर अमृत शर्मा सर अनुवाद और प्रभावी हेडलाइन लेखन का मार्गदर्शन देते हैं। रिपोर्टिंग हेड सचिन सर खबरों की समीक्षा कर महत्वपूर्ण सुझाव साझा करते हैं। अमर उजाला डिजिटल के उत्कर्ष चतुर्वेदी सर डिजिटल पत्रकारिता, वीडियो स्टोरी और रिपोर्टिंग की व्यावहारिक चुनौतियों से परिचित कराते हैं। साइबर सुरक्षा, एआई, फोटोग्राफी, संपादन और पेज डिजाइन जैसे विषयों पर भी प्रशिक्षण मिलता है। यह अनुभव मुझे लगातार निखार रहा है और पत्रकारिता के प्रति मेरा आत्मविश्वास बढ़ा रहा है।

| इंटर्नशिप की कहानियां अभी जारी है...

विश्वविद्यालय के आंगन में नई कोपलें

अदिति सिंह
1BAJCW

मैंने विश्वविद्यालय इसलिए चुना क्योंकि मुझे यहाँ अवसर दिखाई दिए जैसे सीखने के, गलती करने के और खुद को बेहतर बनाने के। मुझे सबसे अच्छी बात यह लगती है कि यह विश्वविद्यालय हमें सिर्फ सफलता नहीं सिखाता, बल्कि असफल होने की भी जगह देता है। यहाँ अगर हम गलती करते हैं, तो उससे सीखने का मौका मिलता है।

उत्सव झा
1BAMC

विश्वविद्यालय का परिसर शहर की चकाचौंध से दूर है जिससे यहाँ का स्वच्छ वातावरण और शांतिपूर्ण माहौल ने मुझे अपनी ओर अत्यंत आकर्षित किया। मुझे विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहने का मौका मिला जो बहुत कम लोगों को मिलता है यहाँ पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और अन्य आवश्यक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

यहाँ आकर यह महसूस हुआ कि विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्राप्त करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह सीखने, सोचने और स्वयं को बेहतर बनाने का भी माध्यम है।

उमंग गुप्ता, 1 B.Sc.EM

सुहासिनी बसंद्रे
1BAJCW

कक्षाएं शुरू होने के बाद यहाँ की चहल-पहल और सकारात्मक माहौल मुझे बहुत पसंद आ रहा है। पहली बार घर से दूर आना मेरे लिए बहुत भावुक अनुभव था, लेकिन यहाँ मुझे बहुत अच्छे दोस्त मिले और अब बिल्कुल 'घर जैसा' महसूस होता है। मुझे खुशी है कि MCU में मुझे सीखने मिल रहे हैं, और मैं इस कोर्स को पूरी रुचि के साथ पूरा करना चाहती हूँ।

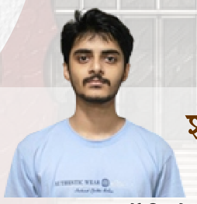

शशांक पाण्डेय
1BAEM

मैंने माखनलाल चतुर्वेदी को उनकी प्रसिद्ध रचना "पुष्प की अभिलाषा" के माध्यम से जाना। मेरे लिए यहाँ आना एक बहुत वास्तविक अनुभव रहा है कि मैं एक नए राज्य में आया, नए लोगों से मिला जिनकी रुचियाँ मुझसे मिलती-जुलती हैं। इससे उत्साह और उम्मीद जागी कि आने वाले समय में मैं भी लेखन, फोटोग्राफी जैसी गतिविधियों में खुद को विकसित कर पाऊँ

खुश हैं अभिभावक

अमित बाजपेयी
देवांश बाजपेयी (1BAEJ) के पिता

विश्वविद्यालय का शांत और सकारात्मक माहौल मुझे बहुत अच्छा लगा। शहर की भीड़-भाड़ से दूर यह परिसर विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ सोचने, सीखने और खुद को विकसित करने के लिए एक बेहतर वातावरण देता हुआ नजर आया।

तरुण कुमार जग्यासी
प्रांजल (1BAEJ) के पिता

मेरी बेटी प्रांजल बी.ए.जे. (BAEJ) में अध्ययनरत है। जब मुझे पहली बार विश्वविद्यालय परिसर आने का अवसर मिला तो यहाँ का वातावरण देखकर मैं बेहद प्रभावित हुआ। परिसर में प्रवेश करते ही एक सकारात्मक, अनुशासित और आत्मीय माहौल का अनुभव हुआ। ऐसा लगा कि यह केवल शिक्षा प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए तैयार किया गया एक प्रेरणादायी वातावरण है।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का प्रायोगिक समाचार पत्र
• प्रधान संपादक: विजय मनोहर तिवारी • संपादक: प्रो. शिवकुमार विवेक • सह संपादक: विनय श्री नेमा, डॉ.ऋतु मिश्र
विद्यार्थी संपादक : रोशनी शर्मा, अभिषेक जाट, सुप्रजा पाण्डेय, आशीष प्रताप सिंह, हिमांशु तिवारी, सृष्टि सक्सेना, ऋषिका सिंह, प्रसून कुशवाहा, शैलेश यादव
लेआउट : आकाश सैनी
publication.mcu@gmail.com